साहिब सत्तनाम गुरूदेवाए नमः

मूल भाव

जग के सभी जीव, कायाधारी देह नहीं, वे चंचल मन माया नहीं, वे काया व मन–माया वशिभूत आत्म भी नहीं, 'आत्म' तो पूरी तरहं से प्राधीनता वशिभूत निरंकार की मन रूपी त्रिलोकि की सम्मोहन भरी माया में डूबी हुई है और ऐसी वशिभूत हुई है कि सर्वसत्ता रूपी साहिब सत्तपुरूष जी का अंश निज–हंसा–रूप भुलाऐ बैठी है।

देखो, कैसा विचित्र व अनोखा महापाश बंधन है, चन्द वर्षों के जीवन की माया उसे ऐसा भ्रमित किए है जिसमें 'मैं' और 'मेरी' के महां प्रपंच रूपी रंग–मंच में ऐसी डूबी हंसा, निज को ना आत्मां, नां काया अपितु मन रूपी इन्द्रियों की चाह पूर्ती करने का एकमात्र साधन बन के रह गई है। पहले काया अर्थात 'मैं', फिर 'मेरी' अर्थात परिवार, मनुष्य जन्म तो मनुष्य परिवार में 'मैं' और 'मेरे', फिर अगला जन्म पशु का जिसमें 'मैं' पशु व पशु–परिवार 'मेरा', इससे भी आगे अगर पक्षी या 'जल–जीव' हों तो, 'मैं' परिन्दा या मच्छ व वह परिवार 'मेरा'। देखा 'मैं' और 'मेरी' का खेला !

क्रूर माया रंग–मंच बदले ! कभी मानव, कभी पशु, कभी पक्षी तो कभी जल–चर, किरदार तो बदले पर जीव कभी भी निज को जानने की इच्छा ही नहीं जगाता। जैसे राम के किरदार में राम और रावण के किरदार में रावण बना, राम का पात्र बना तो पूजा–पाठी जप–तप दान–पुण्य व सात्विक कर्म करने वाला बना, रावण बना तो अपहरण बलात्कार कातिल मांसाहारी रिश्वतखौर व महा लौभी बन जाता है। मानव सब कुछ जानते हुए भी जिस भी किरदार में उतरता है वैसा ही आचरण करता है, रंगमंच में किरदार निभाने के बाद घर भी जाना है अर्थात तन तज कर मृत्यु को प्राप्त होना है, पर नां जी नां ! मूर्खमति मूढ़ मानव तो निज को भूला अपने को राम व रावण ही समझ जग में तड़प रहा है और दूसरों को भी तड़पाये जा रहा है।

हे भाई, तूं किसका शौषण कर रहा है और तेरा शौषण करने वाला कौन ?

सभी जग–जीव स्वंय सत्तपुरूष जी के निज अंश 'हंसा' हैं। तभी तो निज हंसा–रूप भूला मानव जग–माया को लगातार बड़ाये जा रहा है। जगत में केवल इस काया को ही तो ज़िन्दा रखना है अर्थात इसके निर्वाह के लिए माया कमाना जरूरी तो है, परन्तु निर्वाह हेतु दो रोटी कमाने से अधिक माया तो बंधन ही है भाई ! यही नां–समझी ही गहरी नींद है। मानव भ्रम–वश कभी कभार पूजा पाठ जप तप व सजदे करता भी है तो अपने लिए माया रूपी सुख सुविधाऐं पाना ही उसका एकमात्र उद्धेष्य होता है। वह जिन जिन जग गुरूओं की शरणी में गया भी तो वे गुरू भी मन तरंग के वश में ही पड़े हुए मिले। ऐसा भी नहीं कि जगत गुरू अपने भक्तों को कुछ भी नां दे पाते हों, परन्तु कोई कोई श्रद्धा व भक्ति से भरपूर शिष्य ही भक्ति कर स्वर्ग या सुन्न लोकों में स्थान (अल्प–मुक्ति) पाते हैं तथा कर्म फल समाप्ति उपरांत आवागमण में वापिस लौट आते हैं।

सहज मार्ग के पूर्ण संत साहिब सत्तपुरूष जी से साक्षात्कार उपरांत उन्हीं द्वारा प्रदान की हुई सुरति दात (सब्द) साधकों को देकर उनका उद्धार कर रहे हैं और आगे भी करते रहेगें। इस क्रम में साहिब कबीर जी, साहिब रविदास (रे–दास) जी, साहिब दादु दयाल जी, साहिब तुलसी दास हाथरस जी, साहिब ब्रह्मानंद जी, साहिब धर्मदास जी, संत दरिया साहिब जी, संत मीरांबाई जी, बाबा नानक जी, साहिब मधु जी तथा अन्य पूर्ण संतों ने मानव को मन

तरंग से मुक्त करा के पूर्ण मुक्ति अर्थात मोक्ष पद की ओर जीवों को अग्रसित किया।

आज के वर्तमान युग में सर्वश्रेष्ठ सहज मार्ग के पूर्ण संत, साहिब श्री 'वे नाम' परमहंस जी इसी पावन पुनीत कार्य श्रृंखला को आगे बड़ाते हुए जग जीवों के कल्याण हेतु प्रयासरत हैं। बिन सहज मार्ग के पूर्ण सत्तगुरू की शरणी जाये कोई मोक्ष पा ही नहीं सकता। जगत गुरूओं द्वारा दीक्षा में प्रचलित शब्द या ग्रंथों में पहले से ही लिखित शब्दों को ही दिया जाता है। पर सहज सत्तमार्ग के संत सत्तगुरू साहिब सतपुरूष जी से सुरति द्वारा ग्रहण विदेह सब्द (सार–सब्द) ही दीक्षा में प्रदान करते हैं। यह सब्द बोल भाषा व लेखनी में नहीं आता, तभी तो इसे सब्द विदेह कहते हैं। सब्द विदेह में स्वंय सत्तपुरूष जी का वास होता है जिसके सिमरन से जीव निरंकार की मोहनी मन माया से मुक्त होकर अपनी आत्म मैल तज, हंसा रूप पा के मोक्ष को पा जाता है और आवागमण से मुक्त हो सत्तलोक में समाहित हो जाता है।

वर्तमान युग में सत्तगुरू श्री 'वे नाम' परमहंस जी की शरणी आये बिन पूर्ण मोक्ष संभव ही नहीं। परन्तु भ्रमित हुआ जग जीव माया को तजना ही नहीं चाहता। जबकि जग जीवों को माया से मुक्त करने का ही एकमात्र मूल भाव लिये साहिब श्री 'वे नाम' परमहंस जी हर पल लगातार प्रयासरत हैं ।

इसलिए हे प्यारी आत्माओ ! साहिब श्री 'वे नाम' जी की शरणागत आ,
अहम तज और सब्द सुरति पा कर हंसा बन मोक्ष को प्राप्त करो।

साहिब सत्तनाम